International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-09-2022, Accepted: 18-09-2022, Published: 07-10-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 36-39

अमरकांत के उपन्यासों का शिल्प–विधान

सोनम शुक्ला[1], ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी[2]
[1] असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, मर्यादा पुरुषोत्तम पीजी कॉलेज, रतनपुरा, भुड़सुरी, मऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, किसान पीजी कॉलेज, बहराइच, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
"हिन्दी साहित्य के कथाकारों में अमरकांत का नाम प्रेमचंद की परंपरा के सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासकारों में अंकित है।अपने कथ्य–विषयवस्तु के प्रभावपूर्ण सहज उद्घाटन हेतु अमरकांत ने औपन्यासिक संरचना का बखूबी उपयोग किया है।इन्होने अपनी रचनाओं में गहरी सामाजिक संबद्धता से युक्त मूल्यबोध को महत्त्व दिया इसीलिए इनके शिल्प–सौन्दर्य की अलग ख़ासियत दिखती है। अमरकांत ने संवाद–धर्मिता व लोकधर्मिता के विकास के लिए अपने उपन्यासों में भाषा तथा उसके सभी अवयवों के प्रवाहपूर्ण संयोजन तथा समन्वयन का सार्थक प्रयत्न किया है।इनके उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा–शैली के स्वरूप की तुलना प्रेमचंद के कथा–साहित्य में प्रयुक्त हुई भाषा–शैली से की जा सकती है। जिसका मूल कारण प्रेमचंद की तरह ही अमरकांत का भी शहरी मध्यवर्ग तथा ग्राम्यांचल के सामाजिक परिवेश तथा वातावरण से गहरा जुड़ाव था। ऐसे वातावरण की स्पष्ट छाप इनके कथा–साहित्य में सर्वत्र विद्यमान है"।

मूल शब्दः सामाजिक यथार्थवादी, औपन्यासिक संरचना, शिल्प–सौन्दर्य, कथा–साहित्य, भाषा–शैली

प्रस्तावना

अमरकांत के उपन्यासों का भाषिक सौन्दर्य

भाषा एक सामाजिक संपत्ति होती है। भाषा का आविष्कार मनुष्य ने सामाजिक आदान–प्रदान, अपने व्यक्तिगत अनुभवों–विचारों को समाज तक संप्रेषित करने के लिए किया है।अमरकांत ने अपने उपन्यासों में पात्र–परिस्थिति व अनुभूति और विचारों के अनुरूप उन सभी स्रोतों से शब्दों का चयन किया है जिन्हें वे अपने अध्ययन–मनन–चिंतन और अनुभव के बल पर ग्रहण कर सकते थे। ये अपनी कल्पना में अपने पात्रों से तादात्म्य स्थापित करते हुए उन्हीं की भाषा बोलने लगते थे।अपनी रचनाओ में यत्र–तत्र असगुन, दुलख, सिंगार, ब्याह, जमराज, साँझ आदि शब्दों के प्रयोग करने से हमें उनकी भाषा जीवन की नित्य–नैमित्तिक भाषा के निकट जान पड़ती है।इन्होने उर्दू के अनगिनत बहुप्रचलित शब्द भी अपनी भाषा में चारुत्व तथा निखार लाने के लिए प्रयुक्त किया है,जैसे– संजीदगी, गुनहगार, रोजगार, गरीब, हरजाना, शामिल, फर्ज़, हुक्म, फ़रेब, किस्मत, ताल्लुकात इत्यादि।

अमरकांत द्वारा विषयानुकूल पात्र–चरित्र और कथ्यानुरूप संवाद की भाषा के गठन को इनके प्रत्येक उपन्यास में हम देख सकते हैं। इनकी रचना पढ़ते समय यह प्रतीत होता है कि वे उपन्यास न लिखकर किस्सागोई के माध्यम से अपनी बात पाठको तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं; इसीलिए इनकी भाषा में कृत्रिमता, बोझिलता या शुष्क दार्शनिकता नहीं बल्कि सरलता–सहजता दिखती है। उदाहरणस्वरूप सुन्नर पाण्डे की पतोह उपन्यास में उन्होंने अपनी प्रमुख स्त्री–पात्र की व्यथा–कथा को मार्मिक प्रसंगों के साथ–साथ बातचीत के ढंग में भी प्रस्तुत किया है–

"सुन्नर पाण्डे की पतोह मालगोदाम के सामने दाहिनी सड़क पर मुड़ गई, जो बालेश्वर मंदिर की तरफ जाती थी। मोड़ पर ही कुछ लड़के खेल रहे थे। उनमें से एक लड़का बड़ा शरारती था। जब उसने सुन्नर पाण्डे की पतोह को देखा तो वह बेतहाशा हँसने लगा, फिर उसे ऐसा मजा आया कि उसने सुन्नर पाण्डे की पतोह के सामने जाकर बंदर की तरह उछलते–गाते हुए स्वर में बोला– "अरे बुढ़िया बड़ी बेईमान, मांगे करैली का चोखा"।

पूर्वी उत्तर प्रदेश की देशी भाषा का स्वाद देता हुआ यह उपन्यास पाठको को सुन्नर पाण्डे की पतोह के साथ घटित हुई घटनाओं को जीवंत रूप में अपने सामने घटित होता हुआ अनुभव देता है। स्थानीय विशिष्टताओं व चित्रात्मकता के साथ प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग पाठको को कथा–रस का पान कराते हुए उसी के साथ–साथ कथा के अंत तक प्रवाहित होने के लिए उद्वेलित करता है। अगर हमें एक ही लाइन में अमरकांत की औपन्यासिक भाषा की विशिष्टता बताने को कहा जाए तो हम कह सकते हैं कि इनकी भाषा सर्वत्र सरल–सहज–स्वाभाविक–बोधगम्य तथा निरायास है।

अमरकांत के उपन्यासों की संवाद–योजना

अमरकांत ने अपने उपन्यासों में कथ्य को धार देने के लिए जब भी जरूरत समझी, तब–तब उन्होने औपन्यासिक कथ्य में छोटे चुटीले, गत्यात्मक, प्रश्नोत्तर शैली के संवादों को स्थान दिया।इस प्रकार के संवादों से पाठको का जुड़ाव कथानक में उपस्थित पात्रों के साथ बहुत सरलता से हो जाता है क्योंकि यहाँ लेखक नैरेटर की भूमिका में खुद को उपस्थित नहीं करता बल्कि प्रत्यक्ष रूप से पात्रों का परस्पर संवाद कराता है;इसका लाभ यह होता है कि ऐसे संवादों में नाटकीयता का गुण आ जाता है और कथ्य अधिक प्रभावशाली रूप में पाठको तक पहुँचता है।इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि कथा–रस से परिपूर्ण उनके उपन्यासों के संवादों की भाषा नितांत सरल–सहज तथा सुबोध रही है। सरलता–सहजता से परिपूर्ण संवाद की एक बानगी देखिए जब ग्रामसेविका में दमयंती अपने छोटे भाई विनय से बात करती है–

"हिंदी और अंग्रेजी तुम्हारी अच्छी है न?"
"क्लास में सबसे अच्छी"।
"हिसाब कैसा है?"
"वह भी अच्छा है, लेकिन उतना नहीं। एक लड़का है, उसका हिसाब बड़ा तेज है। वह बहुत गरीब है, लेकिन पढ़ने में बहुत तेज है"।
"तुमसे भी तेज है?"

इसी प्रकार मध्यवर्गीय कथानक वाले उपन्यास आकाशपक्षी के संवादों की भाषा और उसके स्वरूप में इनके अन्य उपन्यासों की तुलना में पर्याप्त भिन्नता दिखती है,जिसमें आवश्यकतानुसार संवाद कुछ लंबे अवश्य हैं किन्तु उबाऊ नहीं। इस उपन्यास में

हेमा तथा रवि के बीच होने वाले संवाद का एक उदाहरण देख सकते हैं– "आपके घरवालों ने न माना तो?"
"मेरा ख्याल है, मान जाएंगे। नहीं मानेंगे तो मैं किसी तरह मना लूँगा"।
"मेरे घर वाले नहीं मानेंगे। मुझे ऐसा ही लगता है"।
"देखो, पहले ही से ऐसी बातें नहीं सोचनी चाहिए। .....मैं जाति–पांति को नहीं मानता। मेरा ख्याल है तुम भी नहीं मानती। मैं यह भी नहीं मानता कि कोई बड़ा है और कोई छोटा। मेरा ख्याल है, तुम भी यह नहीं मानती। फिर डरने की क्या जरूरत है? हमको अपने विचारों पर दृढ़ रहना चाहिए। फिर हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता"।
ऐसे संवाद के माध्यम से अमरकांत समाज में बदलती हुई मानसिकता वाले प्रगतिशील विचारों की वाहक शिक्षित नई पीढ़ी की सोच को उजागर करते हैं।इस शिक्षित पीढ़ी को समाज में फैली अशिक्षा के कारण ढोंग–प्रपंच,आडंबर, सामाजिक–पारिवारिक बंधन, जातिगत भेदभाव तथा ऊँच–नीच की भावना का प्रतिरोध करने की आकांक्षा है।इनके उपन्यासों में ऐसी संवाद–योजना में प्रयुक्त भाषा से पात्रों की स्थितियों तथा उनकी चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन हो जाता है। इसी प्रकार देखा जाए तो इन्हीं हथियारों से उपन्यास के संवाद घटनाक्रम के विस्तृत वर्णन के कारण अन्य उपन्यासों की तुलना में अपेक्षाकृत लंबे हैं किंतु यहाँ भी वाक्य–विन्यास बिल्कुल सधा हुआ है।इस तरह के लंबे–लंबे संवाद किसी विमर्श की उपस्थिति के समय ही अमरकांत द्वारा विभिन्न स्थानों पर लगभग हर उपन्यास में प्रयोग किए गए हैं।इसके बावजूद कथाकार अमरकांत को अपनी रचनाओं में छोटे–छोटे संवादों का प्रयोग ही पसंद है यही कारण है कि इनके वाक्यों में दुर्बोधता नहीं है।हम कह सकते हैं कि इनके पद तथा वाक्य संतुलित–सुगठित और स्वाभाविक प्रवाहयुक्त हैं।

अमरकांत की पात्रानुकूल भाषिक–सर्जना

अमरकांत अपने उपन्यासों में पात्रो के चयन या चरित्र–विश्लेषण की परंपरागत पद्धति को महत्त्व न देते हुए,सभी पात्रों व चरित्रों को एक निर्धारित–सुनियोजित ढांचे में प्रस्तुत करने की बजाय उनके समग्र चित्रण पर अपना ध्यान अधिक रखते हैं क्योंकि अगर हम बीच की दीवार उपन्यास के दीप्ति, अशोक, मनफूल, मनोहर, अनिरुद्ध या मोहन किसी भी पात्र को देखें तो यह स्पष्ट है कि ये सारे पात्र अपने चारित्रिक– मानसिक विकास की प्रक्रिया में चित्रित हैं। इसी प्रकार सूखा पत्ता में कृष्ण का व्यक्तित्व–विकास उपन्यास के तीन खण्डों में क्रमिक रूप से हुआ है।अमरकांत ने अपने सभी उपन्यासों में पात्रों के वर्ग–हैसियत,उनकी सामाजिक–पारिवारिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए ही उनके द्वारा प्रयोग में लायी जाने वाली भाषा–शैली का प्रयोग किया है।इसका असर यह हुआ कि पाठको को उपन्यास की कथावस्तु के अनुसार उसमें प्रयुक्त संवाद कृत्रिम या अवास्तविक प्रतीत नहीं होते।जैसे उपन्यास आकाशपक्षी में हेमा का चरित्र–विन्यास करते हुए उन्होंने आत्मालाप व पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है।हेमा का आत्मकथन उसकी मानसिक अवस्था को प्रदर्शित करता है।अमरकांत ने सामान्यतः विषयानुकूल भाषा–शिल्प का प्रयोग ही अपने उपन्यासों में चयनित कथ्य के अनुसार उसकी प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति हेतु किया है।अमरकांत की भाषायी–कुशलता को व्यक्त करता एक और उदाहरण इनके उपन्यास कटीली राह के फूल से लीजिए–
"तुम लोग सिंपलटन व्यक्ति हो। तुम लोग जो देख लेते हो, उसी को सच समझते हो। पर ऊपर जो दिखाई देता है, वह सत्य नहीं है। दुनिया में बहुत सी बातें होती हैं। एक बात के कई कारण होते हैं। जब तक तुम किसी बात को जानते नहीं, उसके बारे में कुछ निश्चित होकर कह भी नहीं सकते"। इसी उपन्यास में अमरकांत ने मधु के रूप में एक आधुनिक शिक्षित युवती का भी चित्रण किया है।मधु की भाषा में हिन्दी के बीच–बीच में अंग्रेजी का प्रयोग करते हुए पात्र का वास्तविक चित्रण हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।देखिए–"ओ अनूप, फॉर गॉड सेक डोंट रिफ़्यूज़! आपको चलना पड़ेगा। अगर नहीं चलेंगे, तो आई विल बी एंग्री विद यू"।
देशकाल–वातावरण की रचनात्मक भाषा– अमरकांत के उपन्यासों को पढ़ते समय हम सहजतापूर्वक यह अनुभव कर सकते हैं कि वे किस काल,कौन सी जगह और किन–किन परिस्थितियों को शब्द दे रहे हैं।अपने भाषायी–उपकरणों से देशकाल–वातावरण के यथार्थ सृजन में इनको अद्भुत सफलता मिली है इसीलिए पाठको को उपन्यास पढ़ते हुए उसमें चित्रित वातावरण की प्रत्यक्ष अनुभूति का–सा आस्वाद मिलता है। सूखा पत्ता में श्मशान घाट का दृश्य अवलोक्य है–
"गंगा एक ओर बालू के बड़े–बड़े टीलों तथा दूसरी ओर माटी की ऊँची चट्टानों के स्नेहाश्रय में चाँदनी की धवल सेज पर सोई थी। जल एकदम स्वच्छ और निर्मल था, जिसमें नन्ही–नन्ही रजत–लहरियां चौतन्य होकर मंद गति से रेंग रही थीं। पैरों के पास किनारे पर गोल–गोल गाज तैर रहे थे"।
अमरकांत का ग्राम्यांचल से जुड़ाव और उस ग्राम्य–वातावरण के यथार्थ चित्रांकन के कारण ही इनको फणीश्वरनाथ रेणु व प्रेमचंद की परंपरा का कथाकार माना जाता है।इनके द्वारा वातावरण की सशक्त अभिव्यक्ति की सर्वोत्कृष्ट रचना इन्हीं हथियारों से उपन्यास है जिसमें स्वतन्त्रता–आंदोलन के दौरान 1942ई. के बलिया जिले का क्रांतिकारी चित्रण है।पूरा बलिया जनपद ही इस उपन्यास में बतौर नायक चित्रित है– "बलिया कचहरी तक आने वाली हर सड़क और गली बड़े–बड़े जुलूसों से भरी थी, जैसे बाढ़ आने पर नदी में गिरने वाले नाले उल्टे बहने लगते हैं। दो–चार सौ लोग नहीं बल्कि हजारों लोग और पूरी तैयारी के साथ। प्रत्येक जुलूस में आगे–आगे एक व्यक्ति तिरंगा झण्डा लेकर चल रहा है और उसके पीछे दो–दो या तीन–तीन व्यक्तियों की अनगिनत कतारें"।

अमरकांत के उपन्यासों का कथा–विन्यास

अमरकांत द्वारा सृजित उपन्यासों के शिल्प की विशिष्टताओं में प्रमुख है कथानक का आद्यंत अंतःसंयोजन। इस शिल्प कौशल की निरंतरता हमें उनके पहले उपन्यास 'सूखा पत्ता' से लेकर उनके अंतिम उपन्यास 'लहरें' तक में दिखती है। इन्हीं हथियारों से उपन्यास का समग्र शिल्प–सौंदर्य उसके आद्यंत संयोजन में ही तो निहित है।

अमरकांत की तटस्थतापूर्ण किस्सागोई

अमरकान्त का 'कथा कहने का' अपना विशेष ढंग था। इसका प्रमाण है कि उन्होने अपने उपन्यासों में कथ्य की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए 'तटस्थ किस्सागोई' का माध्यम चुना। इसी वजह से वे अपनी रचनाओं में अतिशय भाव–प्रवणता से खुद को बचाए रखने में सफल रहे। जैसे काले उजले दिन उपन्यास में इसका नायक इसमें केवल बचपन से प्रौढ़ावस्था तक की अपनी हीनता–कुंठाग्रस्त जीवनगाथा प्रस्तुत करता है। कथानक बिल्कुल सीधा–सपाट है, सभी कथाएं–उपकथाएं नायक से जुड़ती हुई नायक के जीवन के विकास क्रम में सहायक हैं। इसी तरह प्रतीकात्मक शीर्षक वाला उपन्यास सूखा पत्ता भी नायक कृष्ण के व्यक्तित्व की विकास–यात्रा को तीन अलग–अलग खण्डों में प्रदर्शित करने वाला उपन्यास है। इसके अतिरिक्त आकाशपक्षी व कटीली राह के फूल में भी नायक अपनी आपबीती सुनाते हुए कथ्य को विस्तार देते हैं।

उपन्यासों की कथान्विति

अमरकांत ने सामान्यतः अपने सभी उपन्यासों में कथान्विति के सुदृढ़ रचनाक्रम पर विशेष ध्यान दिया है। छोटी–छोटी कड़ियाँ आपस में मिलकर औपन्यासिक कथ्य को प्रभावोत्पादक बना देती हैं। अमरकांत की खासियत है कि वे सभी घटनाओं को उनकी महत्ता और उपयोगिता के सामंजस्य के अनुरूप कथ्य में प्रयोग करते हैं,परिणामस्वरूप कथासूत्र कहीं भी खण्डित नहीं होता और उसमें निरंतरता आद्यंत बनी रहती है।

अमरकांत के उपन्यासों में प्रयुक्त शैलीगत विविधता

शैली या स्टाइल किसी भी रचनाकार के व्यक्तित्व की परिचायक होती है क्योंकि शैली के विश्लेषण से हम किसी लेखक की भाषा में निहित भावों और विचारों की समीक्षा करते हैं। अमरकांत की प्रमुख विशेषता कथानक में विभिन्न घटनाओं का उनके द्वारा किया गया सजीव चित्रांकन है।इन्होने अपने उपन्यासों में इन प्रमुख शैलियों का प्रयोग किया है–

पूर्वदीप्ति (फ्लैशबैक) शैली

अमरकांत के प्रथम उपन्यास 'सूखा पत्ता' इसके अतिरिक्त 'आकाशपक्षी' 'काले उजले दिन' 'सुन्नर पाण्डे की पतोह' 'कटीली राह के फूल' इन सभी उपन्यासों में फ़्लैशबैक शैली अपनायी गयी है। इस शैली में अपने विगत समय का स्मरण करते हुए पात्रो द्वारा कथा कहते हुए कथानक को विस्तार दिया जाता है। इस क्रम में पात्रो की मानसिकता तथा सोच के स्तर पर कथा के प्रवाह के कारण उस पात्र से संबंधित कुंठाएँ, कोरी कल्पनाएँ, हीनताग्रंथियां आदि भी स्वतः व्यक्त होती जाती हैं।पात्रो के अंतर्मन की गहनता को मापने और उनकी मनःस्थितियों के विभिन्न रेशों को अलग अलग करके सुलझाने हेतु हिन्दी साहित्य के कथाकारों ने भी पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग अपनी रचनाओं में अत्यधिक किया है। अमरकांत के उपन्यास सूखा पत्ता का कथानायक कृष्ण कुमार ऐसे ही व्यक्तित्व के रूप में चित्रित हुआ है जो अपने जीवन में भावावेग के अनियंत्रित प्रवाह से किसी पेड़ के सूखे पत्ते की भांति हवा के रुख के साथ किसी भी दिशा में उड़ता चला जाता है। कृष्णकुमार कहता है–

"कृपाशंकर सूखे पत्ते की तरह कभी नहीं था, जो जैसी हवा बहे उसी में उड़ जाता है। हवा बंद होने पर धराशायी, व्यर्थ और बेकाम। मैं अब तक सूखा पत्ता ही तो रहा हूँ"। इस उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली का भी यत्किंचित समावेश तब दिखाई देता है जब नायक कृष्ण अतीत में जाकर अंततः अपनी चारित्रिक कमजोरियों और शक्तियों का तटस्थ विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसी तरह आकाशपक्षी उपन्यास में हेमा का आत्मालाप भी उसे फ़्लैशबैक में ले जाता है–"बीस वर्ष पहले मैं कैसी थी? मैं यह नहीं बता सकती कि मैं कब जवान हो गई। .....मेरे बचपन के आरंभिक वर्ष बड़ी ही खुशी और शान–शौकत में बीते। न मालूम कितने नौकर और नौकरानियां थीं"। इस प्रकार अमरकांत ने अपने उपन्यासों में पूर्वदीप्त शैली का उपयोग करते हुए कथ्य में प्रस्तुत घटनाओं को तीव्र अनुभूति योग्य बनाने का सफलतम प्रयास किया है।

वर्णनात्मक शैली

अमरकांत द्वारा लिखे गए उपन्यासों में 'ग्रामसेविका' 'सुखजीवी' 'इन्हीं हथियारों से' 'बीच की दीवार' 'कटीली राह के फूल' और 'लहरें' वर्णनात्मक शैली में लिखे गए उपन्यास हैं। सुन्नर पाण्डे की पतोह में वर्णनात्मक के साथ–साथ फ़्लैशबैक शैली का भी पर्याप्त प्रयोग किया गया है। ग्रामसेविका उपन्यास के कथ्य का परिवेश–वातावरण एक अति पिछड़े भारतीय गाँव का है जहाँ निर्धनता,अशिक्षा, अनेक प्रकार के शोषण व कई अंधविश्वासों का बोलबाला था। इसी गाँव में दमयंती ग्रामसेविका के रूप में नियुक्त होकर आती है। यह पूरा उपन्यास दमयंती के ही चरित्रांकन तथा उसके जीवन–संघर्षों के रूपायन के उद्देश्य से लिखा गया है। वर्णनात्मक शैली के अंतर्गत ही अमरकांत द्वारा अपनी प्रगतिशील समाजवादी विचारधारा को इनकी विचारधारा के संपोषक तथा संवाहक पात्रो के माध्यम से पाठको के समक्ष अपने अधिकतर उपन्यासों में उजागर किया जाता है जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि इस वर्णनात्मकता से कहीं–कहीं कथानक के कसाव तथा प्रवाह में शिथिलता आने लगती है और कभी–कभी उपन्यास का उद्देश्य जानबूझकर पाठको पर थोपे जाने जैसा लगता है।

आत्मकथात्मक शैली

अमरकांत अपने मन्तव्य को प्रकट करने के लिए इस शैली का प्रयोग बहुत शौक से करते हैं। इसी का नतीजा है कि इस शैली के अंतर्गत उन्होने 'आकाशपक्षी' 'काले उजले दिन' और 'सूखा पत्ता' जैसे उपन्यासों की रचना की।आकाशपक्षी उपन्यास की नायिका हेमा चालीस वर्षीया प्रौढ़ा राजवधू है जो अपने यौवनकाल के शुरुआती दिनों की पीड़ादायक व असफल प्रेमकहानी की गहराइयों में डूबकर अपने अतीत की स्मृतियों में खोती हुई कथानक को विस्तार देती है। उसकी वेदनानुभूति को महसूस करने का प्रयास पाठक इस संवाद के माध्यम से कर सकते हैं–

"मेरे सबसे प्यारे,
आपका पत्र मिला। मैं पढ़कर खूब रोई। मैं बेकार ही आपके जीवन में आई। मैं बहुत ही तुच्छ लड़की हूँ। मैं जीवन में कुछ भी नहीं कर सकती। .....आप मुझे भूल जाइएगा। मैं पुराने जीवन को छोड़ नहीं पा रही हूँ क्योंकि मैं खुद पुरानी और सड़ी–गली हूँ। आप मुझे माफ न कीजिएगा।
अभागिनी
हेमा"

अमरकांत ने अपने उपन्यास काले उजले दिन में भी इसी शैली का उपयोग किया है। इस उपन्यास की खासियत यह है कि इसमें नायक कथा कहता रहता है परंतु कथा के बीच–बीच में ही कथाकार भी अपने वक्तव्यों, मंतव्यों और टिप्पणियों को स्थान देता रहता है।

प्रतीकात्मक शैली

इस शैली के अंतर्गत अमरकांत के 'सूखा पत्ता' 'आकाशपक्षी' और 'कटीली राह के फूल' उपन्यासों की गणना की जाती है क्योंकि इन उपन्यासों के शीर्षक भी प्रतीकात्मक हैं। उदाहरण देखिए– "कटीली राह के फूल' इसका नाम कुछ आडंबरपूर्ण आपको लगे, परंतु इसका मतलब भी है। 'कटीली राह' हमारा परिश्रम, हमारी कर्मठता और ज्ञान के अन्वेषण की हमारी आकांक्षा उसी में हम खिल सकते हैं फूल की तरह"।

चित्रात्मक शैली

वातावरण तथा परिवेश के सजीव चित्रांकन हेतु दृश्यचित्र उपस्थित करने वाली इस विशेष शैली का प्रयोग अमरकांत ने अपने लगभग सभी उपन्यासों में यथास्थान किया है। कुछ उदाहरण अवलोक्य है–

"विवाह की रस्म करीब दो बजे संपन्न हुई।

जब बाहर तथा घर के मर्द मण्डप से निकलकर बाहर चले गए तो चिकों और परदों के अंदर छिपकर शादी देखने वाली औरतें दूल्हे को अकेले पाकर झमाझम–छमाछम करतीं, डाकुओं की तरह पहुँच आईं। ....इसके बाद दूल्हा–दुल्हन को कोहबर में ले जाया गया। कोहबर के द्वार पर खास तरह से उन लड़कियों और स्त्रियों ने, जिनका दूल्हे से मजाक का रिश्ता लगता था, आगे बढ़कर दूल्हे को रोक लिया"।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कथाकार अमरकांत के उपन्यासों की शिल्प–योजना सरल–सहज तथा बोधगम्य है।इनके अधिकतर उपन्यासों के कथानक इकहरे और सपाट हैं किंतु सर्वाधिक प्रसिद्ध औपन्यासिक कृति इन्हीं हथियारों से का शिल्प–विधान इनके अन्य सभी उपन्यासों से भिन्न है क्योंकि इसमें कई कथाएं–उपकथाएं एक साथ प्रवाहित होती हुई वर्णित हैं।समग्रतः देखा जाए तो अमरकांत का औपन्यासिक रचना संसार सामान्य जनता के जीवन से अनुप्राणित है।इनके उपन्यासों में जनसमान्य खासकर निम्न मध्यवर्ग अपने सारे सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, शक्ति और कमजोरियों के साथ प्रस्तुत हुआ है। प्रगतिवादी कथाकार होने के कारण अमरकांत ने कला को सामाजिक परिवर्तन व जनविरोधी सामाजिक–व्यवस्था के उन्मूलन हेतु एक तेज़ धारदार औज़ार के रूप में प्रयोग किया।

समाहार

निःसन्देह अमरकांत व्यापक और समृद्ध अनुभव संसार वाले लेखक थे।इसी के चलते अपने उपन्यासों की संरचना में जिन आवश्यक तनावों,मानसिक द्वन्द्वों व संघर्षों को शब्द देना लेखक का अभीष्ट रहा है, उसमें लेखक की भाषा पूर्ण समर्थ दिखती है।इन्होने स्थानीय अनेक शब्दों, लोकोक्तियों, मुहावरों और लोकगीतों का प्रयोग करते हुए अपने उपन्यासों के कथ्य को सजीव, गत्यात्मक, प्रभावोत्पादक और संप्रेषणीय बनाया है।इसके साथ ही अपने सभी उपन्यासों में वाक्य–रचना पात्रो और परिस्थितियों की मनःस्थितियों व मांगों के अनुसार करते रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. अमरकांत, सुन्नर पाण्डे की पतोह (उपन्यास), पृष्ठ–19
2. अमरकांत, ग्रामसेविका (उपन्यास), पृष्ठ–70
3. अमरकांत, आकाशपक्षी (उपन्यास), पृष्ठ–08,197,211
4. अमरकांत, काले उजले दिन (उपन्यास), पृष्ठ–103
5. अमरकांत, कटीली राह के फूल (उपन्यास), पृष्ठ–45,71
6. अमरकांत, सूखा पत्ता (उपन्यास), पृष्ठ–79,184
7. अमरकांत, इन्हीं हथियारों से (उपन्यास), पृष्ठ–418
8. अमरकांत, बीच की दीवार (उपन्यास), पृष्ठ–129–130
9. ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी,इक्कीसवीं सदी में ज्ञानपीठ–पुरस्कृत हिन्दी साहित्यकारों के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन (सन 2000ई.–2020ई.तक) (शोध प्रबंध)